Dr. Sunil Kr. 'Suman'
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study Material
B.A. Part-II (H)
Paper-III
Date:- 3-10-20
DO-Next class

Models of Psychology

Behaviouristic Model

(2) साधनात्मक या क्रियाप्रसूत अनुबंधन (Instrumental or operant conditioning):- इस तरह के अनुबंधन की जड़ थॉर्नडाइक द्वारा प्रतिपादित प्रभाव नियम (Law of effect) है जिसे बाद में स्किनर (Skinner) ने काफी वैज्ञानिक ढंग से न केवल परिवर्द्धित किया बल्कि उसका उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया। स्किनर ने ही सचमुच में ही क्रियात्मक अनुबंधन के संप्रत्यय को लोकप्रिय बनाया। इस अनुबंधन के अनुसार व्यक्ति यह सीखता है कि उसे वांछित लक्ष्य (desire goal) की प्राप्ति किस तरह से हो सकती है। किसी प्रकार पुरस्कार (Reward) को पाना लक्ष्य हो सकता है या फिर किसी दंड से दूर रहना सीखना लक्ष्य हो सकता है। यहां वांछित व्यक्ति किसी वांछित उद्दीपक (desire stimulus) के पहले ही एक अनुक्रिया करता है। यदि अनुक्रिया से ठीक वह वांछित उद्दीपक की वह प्राप्ति हो जाती है (पुरस्कार) तो व्यक्ति उस अनुक्रिया को भविष्य में करना चाहता है या दोहराना चाहता है। क्रियाप्रसूत सीखना (Operant Learning) के माध्यम से प्राणी धीरे-धीरे यह सीख लेता है कि कौन सा व्यवहार वांछना या पुरस्कार देने वाला है तथा कौन सा वांछना या व्यवहार से दंड मिलने वाला है। इससे व्यक्ति कैसा व्यवहार धीरे-धीरे सीख लेता है जो उसके समायोजन (adjustment) में उसे मदद करता है।

P.T.O

इस तरह से स्कीनर ने थॉर्नडाइक के 'प्रभाव नियम' को पुनर्बलन का नियम (Principle of Reinforcement) के रूप में नामकरण किया और प्रभाव नियम में उद्दीपक तथा अनुक्रिया के बीच साहचर्य पर बल न डालकर अनुक्रिया (Response) तथा उसके परिणाम (consequences) पर बल डाला है। सचमुच में उद्दीपक (Stimulus) अनुक्रिया से सम्बन्धित नहीं होता है बल्कि वह अनुक्रिया के होने का मात्र संकेत देता है जिसे पहले पुनर्बलित (Reinforced) किया जा चुका है। इस तरह के उद्दीपक को स्कीनर ने विभेदी उद्दीपक (discriminative stimulus) कहा है जो प्राणी सिद्धान्तवादी को यह बतलाता है कि वह अमुक व्यवहार करेगा तो अमुक परिणाम मिलेगा। इस अर्थ में स्कीनर को एस-आर सिद्धांतवादी (Stimulus-Response theorist) न मानकर आर-आर सिद्धान्तवादी (Response-Reinforcement theorist) मानना उचित है। स्कीनर ने पुनर्बलन (Reinforcement) तथा विभेदी उद्दीपक (discriminative stimulus) के संप्रत्ययों के सहारे समायोजी (adaptive) तथा कुसमायोजी (maladaptive) के अर्जन की व्याख्या किया है। विशेष असामान्य व्यवहार (abnormal behaviour) की उत्पत्ति की व्याख्या क्रियाप्रसूत अनुबंधन (Operant conditioning) से किया होती है, को लेविनसोन (Levinsohn, 1974) द्वारा विश्लेषित किए गए एक केस से इस तरह से समझाया जा सकता है- जब व्यक्ति को अनुक्रिया करने के बाद पुनर्बलन का निम्न मात्रा (Low Amount) दिया जाता है, तो इससे उसमें विषाद (Depression) उत्पन्न होता है। जब पुनर्बलन निम्न मात्रा में व्यक्ति को दिया जाता है, तो व्यक्ति बहुत कम अनुक्रियाएं करता है जिससे पुनर्बलन की मात्रा और कम हो जाता है, तथा व्यक्ति में विषादी प्रतिक्रिया (depressive reaction) विकसित होता है।

क्रियाप्रसूत अनुबंधन पर आधारित बहुत सारे इस प्रविधियाँ विकसित की गयी है जिनका उपयोग क्रियाप्रसूत चिकित्सा (Operant therapy) में किया जाता है।

End.